# सत्य साहित्य

वर्ष 53 / अंक 1
जुलाई-सितम्बर
2014

मूल्य ₹ 5
**सत्य साहित्य,** श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

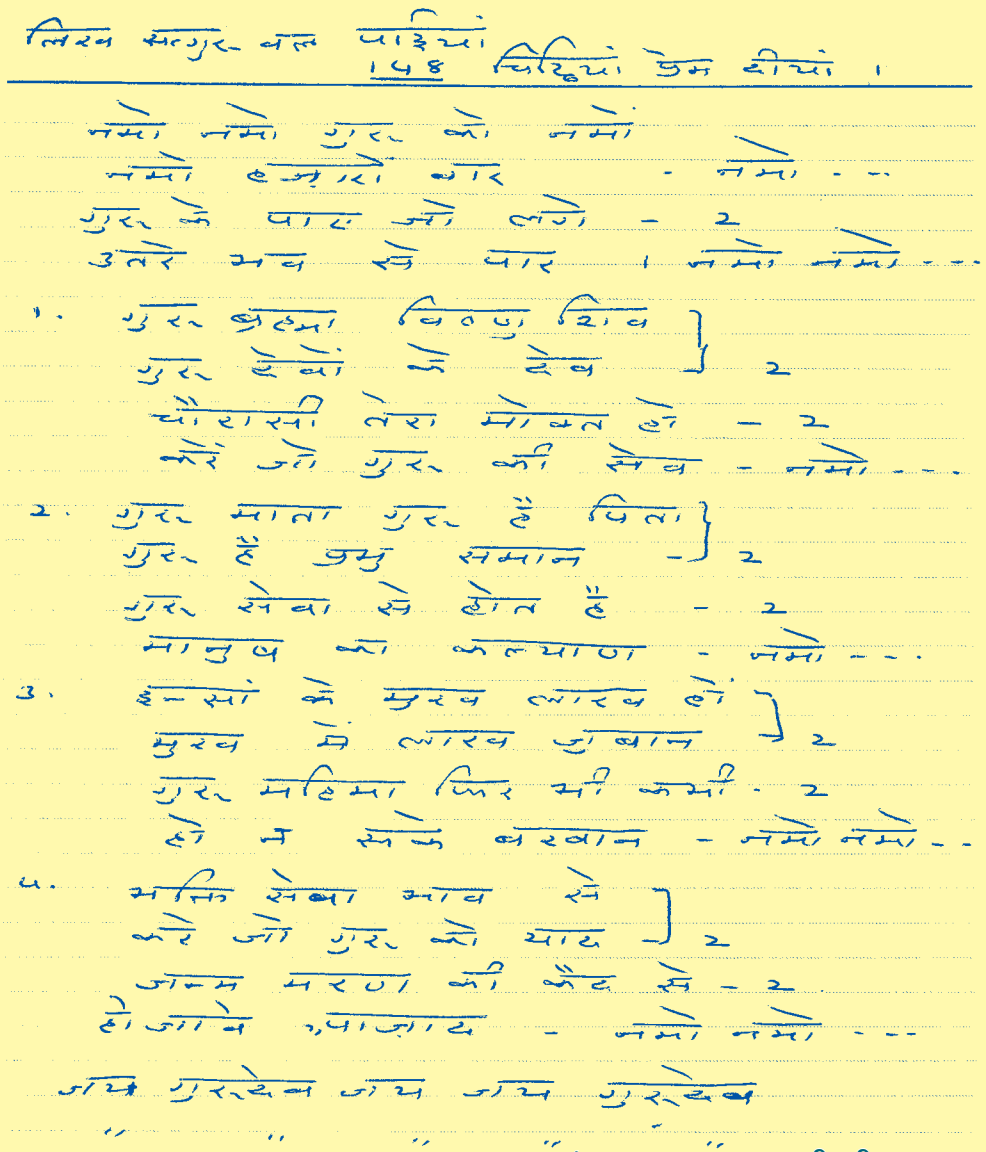

लिख सद्गुरु वल पाइयां
148 चिट्ठियां प्रेम दीयां ।

नमो नमो गुरु को नमो
नमो हजारों बार - नमो - -
गुरु के पांव जो लगे - 2
उतरे भव से पार । नमो नमो - - -

1. गुरु ब्रह्मा विष्णु शिव
गुरु देवों के देव ] 2
चौरासी तेरा मोचन हो - 2
करे जो गुरु की सेव - नमो - - -

2. गुरु माता गुरु है पिता
गुरु है प्रभु समान ] 2
गुरु सेवा से होत है - 2
मानुष का कल्याण - नमो - - -

3. इन्सां के मुख लाख हों
मुख में लाख जुबान ] 2
गुरु महिमा फिर भी कभी - 2
हो न सके बखान - नमो नमो - -

4. भक्ति सेवा भाव से
करे जो गुरु को याद ] 2
जन्म मरण की कैद से - 2
हो जाते आजाद - नमो नमो - - -

जय गुरुदेव जय जय गुरुदेव
" " " "

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

## इस अंक में पढ़िए


- भजन
- परिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि
- व्यास पूर्णिमा पर संदेश
- अनुभूतियाँ
- 'गुरु एवं गुरु-संगति'
- व्यास-पूर्णिमा पर गुरुजनों को श्रद्धांजलि
- प्रश्न-उत्तर
- परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के संस्मरण
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- बच्चों के लिए
- कैलेंडर


सत्य साहित्य

गुरुदेवाय नमः

**ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम्।**
**मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा।**

परम पूजनीय स्वामी जी महाराज

परम पूजनीय महाराज जी

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज

# महर्षि जी को श्रद्धांजलि

महर्षि जी का देह तत्व जब माँ गंगा में समा गया उस गुरु पूर्णिमा को, एक हाहाकार, एक अति विरह की स्थिति छा गई थी। लेकिन गुरु तत्व एक ''देह या शरीर तत्व'' नहीं है वह प्रमाण किया महर्षि ने उस पावन परिनिर्वाण के पश्चात्। साधकों का प्रेम, संकल्प लेना, जाप का या मौन साधना करना–ये सब गुरु तत्व को स्पर्श करते हैं और गुरुजनों की सूक्ष्म अनुभूति और साक्षात्कार में परम गुरु राम की झलक दिखाई देती है। लाखों साधकों को जीवन में गुरु के सूक्ष्म साक्षात्कार और वार्तालाप की अति प्रिय अनुभूति हुई।

एक बार 2004 या 2005 में मैंने महाराज श्री से पूछा कि आप सूक्ष्म रुप में साधकों को देख कर और मिल कर आते हैं? उन्होंने अति गम्भीर मुद्रा में बोला,''हाँ''। फिर मैंने कहा कि आपका अरोमा पहचाना गया था और (पूछा कि) आत्मा की सुगन्ध को क्या अनुभव किया जा सकता है। उन्होंने कहा था, ''हाँ'', सूक्ष्म रुप की भी कई प्रकृतियाँ या नेचर होती हैं, और भी बातें हैं इसी संदर्भ में। जिसकी मूल बात यह थी गुरु का शरीर भी गुरु का नहीं रहता और सूक्ष्म और स्थिर रुप में गुरु हर जगह होते हैं और उन्होंने ये बातें स्वामी जी महाराज के संदर्भ में कहीं।

आज महर्षि जी के महा परिनिर्वाण की याद में, सिर्फ एक ही बात मन में आ रही है, जब गुरु का शरीर था, तब भी वह सूक्ष्म रुप में सबकी सेवा करते थे और आज भी वे सूक्ष्म रुप में हर साधक के दिल में विराजते हैं और अंग संग रहते हैं।

परम गुरु की ऐसी ही कृपा है कि तीनों गुरुजन अपने सूक्ष्म रुप में हर साधक के पास खड़े हैं। ''वे एक सोच की दूरी पर हैं'' They are just a thought away. गुरु तत्व को कृपया अनुभव करें और राम जी को प्यार करें। जय जय राम।

# परम पूजनीय प्रेम जी महाराज को श्रद्धांजलि

परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का परिनिर्वाण दिवस 29 जुलाई को है। उनके श्री चरणों में बैठ कर उनका नाम गुण सामने प्रकट होता है। 'प्रेम' शब्द ईश्वर तत्व को समझाता है और 'प्रेम' शब्द से विराट इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। प्रेम ईश्वर का गुण है और प्रेम से ईश्वर प्राप्ति का पथ भी है। स्वामी जी महाराज ने अपने श्रीमुख से कहा है कि ''प्रेम की प्रार्थना ईश्वर जल्दी सुनते हैं।'' महर्षि की परिभाषा में – वे सर्वव्याप्त हैं और आस्था के प्रतीक हैं। पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज अपने नामानुसार परम दयालु हैं और कष्ट निवारक भी, मानो राम जी के प्रतिबिम्ब हैं।

लाखों साधक आज भी परम पूजनीय प्रेम जी महाराज का दीदार या दर्शन करते हैं। जब जब जीवन में संकट या विपदा आती है, परम पूजनीय महाराज जी उनके संकट मोचन करते हैं।

आज एक बात न जाने क्यों बहुत प्रखर रुप से मन में विराज रही है कि हमें अगर मौन साधना करनी है और अन्तर्मुखी होना है तो परम पूजनीय प्रेम जी महाराज को भीतर ला कर साधना करनी चाहिए। दूसरों के कष्टों को अपने ऊपर ले लेना उनका स्वभाव रहा है और जीवन की धर्म गति भी। पूज्य श्री प्रेम जी महाराज विनम्रता की दिव्य मूर्ति हैं और जीवन को भक्ति और प्रेम के पथ में चलने की प्रेरणा भी। कोटि कोटि प्रणाम परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी को। अपने चरणों में रखना हे गुरुदेव! आत्मिक नमन।

व्यास पूर्णिमा पर संदेश

# व्यास पूर्णिमा पर संदेश

अध्यात्मवाद में व्यास पूर्णिमा का पर्व एक विशेष महत्व रखता है। इस शुभ दिन की महिमा रहस्यमय है, आदि काल में इसी दिन जगद्गुरु महर्षि व्यास द्वारा संसार में ज्ञान का संचार हुआ जो अब तक नवतर है और भविष्य में भी नदी के प्रवाह की तरह सदा ही चलता रहेगा। सब सज्जन सन्त व्यास के आभारी हैं और इस शुभावसर पर उनका ध्यान करके उनको बार–2 नमस्कार करते हैं, जिन्होंने इस ज्ञान गंगा में स्नान किया है वह भी नमस्कार के योग्य हैं – उनके सम्मुख मस्तक अपने आप ही झुक जाता है।

व्यास पूर्णिमा को कई मतों के मानने वाले गुरु पूर्णिमा भी कहने लगे हैं और परमेश्वर मान कर ही गुरु को पूजते हैं, बहुत द्रव्य भी इस दिन गुरु के चरणों पर वार देते हैं।

बहुत वर्षो की बात है 14 न. बाराखम्बा रोड पर महाराज विराजमान थे, कि यह शुभ पर्व आ गया। लोगों ने बादाम, मिश्री आदि द्रव्य लेकर – जैसे दूसरे सन्तों की ओर देखा हुआ था – उनके प्रचलित किये हुए तरीके बरतने की चेष्टा की। महाराज अपने कमरे में ही थे, नियत समय पर बाहर पधारे और यह सब देख कर बहुत ही दुःखी हुए। कहने लगे कि यदि मुझे पता होता तो मैं बाहर ही न आता। यह सब द्रव्य कौन लाया है ? सब मौन थे और अपने किये पर पश्चात्ताप कर रहे थे। महाराज ने सब से वचन लिया कि आगे से

कभी कोई वस्तु नहीं लानी होगी, नहीं तो इस पर्व को नहीं मनाया जायेगा। उस वर्ष के पश्चात् ऐसे शुभावसर देहरादून में आते रहे, बहुत भाग्यशाली देवियाँ और पुरुष इस शुभावसर पर लाभ उठाते रहे। वर्षा के दिन होते – लोग भीगते–फिसलते राय बहादुर जोधामल जी के निवास स्थान 9, हरिद्वार रोड पर समय से पूर्व पहुँचते, कितनी आनन्द की लहर चल रही होती। अमृतवाणी के पाठ के आरम्भ होने के पश्चात् परम पूज्य महाराज आसनासीन होते। जहाँ व्यास जी को नमस्कार करते वहाँ सब साधकों के आगे भी मस्तक टेक देते, इस नम्रता भाव को देख कर किस के विकसित नयन गंगा यमुना नहीं बहाते होंगे। आज के दिन यह हम सब का परम कर्त्तव्य है कि उस परम प्रभु के चरण में सीस नवायें और उनके बताये हुए पथ पर प्रेम और बन्धु भावना को समुन्नत करते हुए साथियों सहित नम्रता भाव से आगे बढ़ते जाएं।

देहरादून के पश्चात श्रीरामशरणम् हरिद्वार का उद्घाटन होने पर इस पर्व को महाराज ने जो स्वरूप दिया वह अवर्णनीय है। पंच रात्रि साधना सत्संग जो महाराज की देन है, वह अतुल्य है और इस युग में अपना ही स्थान रखती है। उस दाता के दान की ओर यदि ध्यान करें तो आँखें ही चुन्धिया जाएं। लेखनी लिख न सके। यह तो केवल हृदय ही अनुभव कर सकता है।

(*सत्य साहित्य*, जुलाई 1962) ■

# व्यास पूर्णिमा पर संदेश

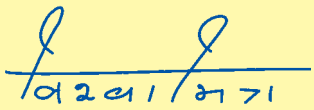

हम भली भान्ति जानते हैं, कि संसार में रहते, साधना करना अति कठिन है। कठिन अवश्य है, परन्तु असम्भव नहीं। विश्व भर के सन्त एक मत हैं, कि प्रभु–प्राप्ति के अतिरिक्त किसी अन्य उद्देश्य से जिया जीवन बिल्कुल बेकार है। ईश्वर–अनुभूति ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। ये सब सुनते एवं जानते हुए भी, ईश्वरोन्मुख होने की बजाय, विपरीत दिशा में जा रहे हैं। धन प्राप्ति, यश–मान के लिये लालसा, विषय–सुख के लिये तृष्णा अर्थात् हमारे सभी प्रयास हमें ईश्वर–विमुख करने वाले हैं । तब शान्ति कैसे लाभ हो? हमारे प्रयत्न तो अशान्त रहने वाले। महर्षि व्यासदेव फरमाते हैं : ''जो फल सतयुग में ध्यान व तप करके 10 वर्ष में मिलता, उसे त्रेता में व्यक्ति यज्ञादि करके एक वर्ष में और द्वापर में देवार्चन करके एक माह में प्राप्त कर लेता है, परन्तु कलयुग में श्री राम नाम के कीर्तन से, वही फल सुगमतापूर्वक एक दिन में ही लाभ होता है। व्यास जी चकित होते हैं कि जिस राम–नाम में संसार के जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त करने की अपरिमित शक्ति है, उसे क्यों नहीं जपते? जो मुक्ति दुष्कर, राम नाम के सिमरन से अति सरल। मरते समय राम नाम लेने से बड़े से बड़ा पापी भी मुक्ति पा लेता है। परन्तु यह अन्त काल का स्मरण, पूर्व अभ्यास के बिना कैसे हो ? यह सत्य जानो, क्षण भर का भी भाव सहित जपा नाम व्यर्थ नहीं जाता। निरन्तर जपने वाले पर कोई विपत्ति नहीं आती। लाखों जन्मों के संचित पाप संस्कारों को नष्ट करना चाहते हो, अपना कल्याण चाहते हो, तो कल्याण–कारी मधुर राम नाम भक्तिपूर्वक निरन्तर जपो। राम नाम रुपी छाता लेकर चलो और दुःखदायी वर्षा के दुःख से बचो, भीगने से बचो। वर्षा तो होगी, पर आप मूसलाधार वर्षा द्वारा भीगोगे नहीं, सुरक्षित रहोगे, परमेश्वर का कोटि कोटि धन्यवाद करोगे कि उनकी कृपा के प्रताप से अभाव, संकट एवं असफलता आदि के विकट समय में भी राम नाम का विस्मरण नहीं हुआ। सन्त आश्वासन देते हैं, जो राम का ध्यान करते हैं, राम उनका ध्यान रखते हैं।

**''मुख में राम नाम, हाथ से काम,**
**मिल के रहेगा परमात्मा का धाम।''**

आज के इस मांगलिक पर्व पर सभी को हार्दिक बधाई, परमेश्वर कृपा एवं मेरे गुरुजनों के शुभाशीष सबको प्राप्त हों। सप्रेम नमन्।

*(व्यासपूर्णिमा के आगमन पर परम पूजनीय श्री महाराज जी की शुभ कामनाएँ। प्रस्तुत संदेश 2001 में परम पूजनीय श्री महाराज जी द्वारा दिया गया था।)*

## अनुभूतियाँ

### 'सामूहिक जाप के दौरान हुई अनुभूति'

उस महायज्ञ में भाग लेने के लिए पहले दिन ही परमात्मा से प्रार्थना की कि मेरी सुप्त शक्तियों को जागृत कीजिए, मुझे अध्यात्म में आगे बढ़ायें। कब जाप शुरु होता कब खत्म होता, पता ही नहीं चलता था। सबसे आगे बैठ कर दो घंटे चौकड़ी लगा कर, सातों दिन श्री अधिष्ठान जी पर त्राटक करके बड़े भाव से, जाप किया। जो माँगा वह मुराद भी पूरी हुई। जाप के छठे दिन महसूस हुआ जैसे कुछ सैकण्ड किसी ने मेरी रीढ़ की हड्डी पर हाथ रखा। एक बहुत ही मज़बूत हाथ का स्पर्श महसूस किया। उसी दिन रात को स्वप्न में मुझे खून की उल्टी हुई। मेरे राम जी ने, गुरुजनों ने मुझ पर आने वाला भारी संकट स्वप्न में ही काट दिया। सातों दिन जाप करते हुए श्री अधिष्ठान जी में (हरा मिश्रित) पीले रंग के चक्र में घूमते हुए दर्शन हुए।

सात दिन कैसे व्यतीत हुए पता ही नहीं चला। तपती धूप, वर्षा आदि का कोई प्रभाव नहीं था। एक नई प्रेरणा, एक नशा, जनून मन में भर गया। लगता है कोई समय व्यर्थ न जाए और जाप करती रहूं। यह नशा दिन प्रतिदिन बढ़ता जाए। मैं शरीर से घर जाती हूं पर आत्मा तो श्रीरामशरणम् में ही रहती है। ऐसे ही मेरी बुद्धि को परमात्मा अपने बस में रखें।

# गुरु एवं गुरु-संगति

गुरु जब नाम देता है तो उसमें अपनी आध्यात्मिक शक्ति भर देता है। वह मन्त्र के द्वारा शिष्य में अपनी शक्ति सम्प्रेषित करता है। 'गुरु' शब्द का अर्थ है, 'अन्धकार दूर करने वाला' अर्थात् प्रकाश का प्रदायक। गुरु आध्यात्मिक उद्‌बोधक है। गुरु मानव–रूप में जीवों की अविद्या के प्रतिमोचन के लिए साक्षात् भगवद्‌मूर्ति है। अज्ञानता रोग है। ज्ञान अरोग्यता है। गुरु दिव्य–भिषग् है, जो हमें आत्मज्ञान देकर आरोग्य बनाता है।

इससे पूर्व कि हम गुरु–कृपा प्राप्ति के योग्य बन सकें, हमें अपने माता–पिता की प्रेमपूर्वक सेवा करके अपना शोधन करना होगा। सर्वप्रथम हमारी माननीय एवं श्रद्धास्पद हो माँ, फिर पिता, तदुपरान्त गुरु, जो अविद्या के बन्धन से हमारा मोचन करता है।

एक योगी जिसे परमात्मा की अनुभूति हो चुकी है, केवल वही दूसरे जीव को उद्दीप्त एवं प्रबुद्ध कर सकेगा। केवल मन्दिर में जाने से काम नहीं बनेगा। मात्र पुस्तकों के अध्ययन से भी काम नहीं बनेगा। उन महात्माओं का संग जिन्हें परमात्मा का साक्षात्कार उपलब्ध है, अनिवार्य है।

सन्त–विचार, शक्ति, दृष्टि एवं स्पर्श के माध्यम से अपनी शक्ति का संचार दूसरों में करते हैं। जब सन्त किसी व्यक्ति के विषय में सोचता है, चाहे दूरवासी ही हो, उसे आध्यात्मिक सहायता मिलती है। सन्त किसी मनुष्य पर दृष्टि डालता है तो उसका उद्धार होता है। उसमें एक नवीन चेतनता उदय होती है। यदि सन्त किसी साधक को स्पर्श करता है, तो उसे अपने भीतर व्यापक परिवर्तन की प्रतीति होती है।

सन्त के क्या लक्षण हैं ? समदर्शन अर्थात् समदृष्टि एक प्रमुख सद्‌गुण है जो सन्त को दूसरों से उत्कृष्ट बनाता है। यह उसके जीवन का प्राण है। वह सब में परमेश्वर को देखता है तथा सबसे सम–प्रेम करता है। यद्यपि सामान्य जन व्यक्तिगत दृष्टि से, विषमता से अभिभूत रहते हैं, साधु एवं सन्त जिन्होंने सत्य की अनुभूति की है, अपने विचारों, वाणी एवं कृत्यों से सार्वभौमिक व्यवहार दर्शाते हैं। वे सदैव अपने अमरत्व एवं सर्वानन्दमय स्वरूप के प्रति सचेत भी रहते हैं तथा इस प्रकार मृत्यु के भय से मुक्त रहते हैं। वे जानते हैं कि जीवन तो अविनाशी है और दिव्यता प्रत्येक व्यक्ति में अपरिहार्य है।

**सन्त के क्या लक्षण हैं ? समदर्शन अर्थात् समदृष्टि एक प्रमुख सद्‌गुण है जो सन्त को दूसरों से उत्कृष्ट बनाता है। यह उसके जीवन का प्राण है। वह सब में परमेश्वर को देखता है तथा सबसे सम-प्रेम करता है।**

ऐसे कोई बाह्य चिन्ह नहीं जिनके द्वारा एक जीवन्मुक्त–योगी पहचाना जा सके। उसके सींग नहीं उग आते। परन्तु वह तो सदैव आनन्दमग्न रहता है। वह समस्त परिस्थितियों में प्रसन्न रहता है। साधारणतया, उससे किसी चमत्कार की अपेक्षा नहीं रखी जाती, यद्यपि ईश्वरीय इच्छा से प्रेरित, उसकी अपनी इच्छा न होते हुए भी उससे कई चमत्कार हो जाते हैं।

सत्संग अर्थात् सन्त का संग निस्सन्देह मूल्यवान है। परन्तु यह भी सही प्रकार का होना चाहिए। आन्तरिक सम्पर्क स्थापित होना चाहिए। अन्यथा साधक के मन के बहिर्मुखी होने की तथा सन्त के स्थूल व्यक्तित्व (देह) के साथ आसक्त रहने की आशंका रहती है और वह उस निर्गुण तत्व से, जिसकी वह साक्षात् मूर्ति है, वंचित रहता है। उस आन्तरिक तत्व की गहराई तक पहुंचे बिना, जिसका सन्त प्रतिनिधि है, सत्संग के पूरे लाभ प्राप्त नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए ताकि वह यह सोचने की गल्ती न करे कि सन्त के स्थूल देह की एकमात्र पूजा से, उसकी सेवा

से, किन्तु समूचे भूत समूह में उसकी अभिव्यक्ति अवलोकन न करके तथा समभाव से उसकी सेवा की उपेक्षा करके, उसे सन्त कृपा उपलब्ध हो सकेगी। साधक के लिए संकीर्णता एवं स्वार्थपरता से अधिक कुछ भी खतरनाक नहीं है। उसकी प्रगति इसी पर निर्भर करती है कि उसने अपने हृदय को कितना विस्तृत किया है तथा अपनी दृष्टि को कितना सर्वतोमुखी किया है।

यदि कोई किसी संस्था से सम्बद्ध होता है तो उसकी आध्यात्मिक प्रगति किसी एक अवस्था के उपरान्त प्रतिहत हो जाती है अर्थात् वह उसके आगे उन्नत नहीं होता। अध्यात्म सम्बन्धी वही नियम उत्तम हैं जो दूसरों द्वारा निर्मित न हों अपितु अन्तर्यामी गुरु द्वारा स्वतः स्थापित हों। एक पेड़ दूसरे पेड़ की छाया में विकसित नहीं होता, प्रत्युत बौना रह जाता है। वह खुले में ही पनपता है। इसी प्रकार आपको भी अपने आध्यात्मिक विकास के लिए स्वतन्त्र एवं खुला वातावरण ही चाहिए। साधु एवं सन्तों से प्रकाश एवं प्रोत्साहन प्राप्त कर सकते हैं; परन्तु अपनी प्रकृति के निर्माण के लिए स्वाधीनता का वातावरण ही होना चाहिए जो बाह्य मार्ग–प्रदर्शन एवं हस्तक्षेप से मुक्त हो। सदैव बहिरंग प्रेरणा पर ही अवलम्बित रहकर शिष्य अपने अन्तस्थ में नहीं झांकता और न ही अपने हृदय में स्थित परमात्मा की टेक लेता है।

**चूंकि आपने गुरु-मन्त्र ग्रहण किया हुआ है, क्या आप सोचते हैं कि आपको इस पुनरावृत्ति की आवश्यकता है कि आप परमात्मा के स्वीकृत बालक हैं ? आप ऐसे हैं, यह सदैव अनुभव करें, स्मरण रखें। आपका ईश्वर, आपका गुरु आपके भीतर ही आसीन है।**

सन्तों से प्रेरणा पायें, किन्तु स्थायी रूप से किसी आश्रय में शरणागत रहने (आश्रयस्थल) का कदाचित न सोचें। मुक्त एवं खुले वातावरण में अकेले रहें। तब भीतर से ईश्वर आपका नेतृत्व करेगा। अन्तर्यामी प्रभु आपके उस गुरु के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जिसने बाहर से मनुष्य रूप में आपको दीक्षित किया था। गुरु सनातन, सर्वव्यापक आत्मा है। उसे मात्र मानवरूप में ही धारण न करें। यदि आप प्रारम्भ से ही ऐसा स्वभाव बना लें तो आपको अनुभूति होगी कि गुरु कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। आप कभी उसकी अनुपस्थिति अनुभव नहीं करेंगे; क्योंकि वह तो शाश्वत आपके अंग–संग है। गुरु से महान् अन्य कोई देव नहीं। गुरु तो जगदीश्वर है, परम तत्व है, आपका तथा सारे भूत समूह का स्वामी है। गुरु ही श्रीराम है।

चूंकि आपने गुरु–मन्त्र ग्रहण किया हुआ है, क्या आप सोचते हैं कि आपको इस पुनरावृत्ति की आवश्यकता है कि आप परमात्मा के स्वीकृत बालक हैं ? आप ऐसे हैं, यह सदैव अनुभव करें, स्मरण रखें। आपका ईश्वर, आपका गुरु आपके भीतर ही आसीन है।

वस्तुतः अन्य कुछ भी इतना उन्नायक नहीं, जितना सत्संग। सभी सन्त गुरु की अनिवार्यता पर सहमत हैं। ऐसा कहना कि गुरुहीन साधक आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त कर सकेगा बिल्कुल वैसे ही कथन के तद्रूप है जैसे कि बच्चा बिना जननी के पैदा हो सका।

एक क्षण के लिए भी अपने अविनाशी एवं परमानन्दमयी सत्स्वरूप को मत भूलें। ऐसी चेतना अथवा स्मृति तभी बनी रह सकती है, जब आप सन्तों के सतत् सम्पर्क में रहते हैं। उन सभी के प्रति जो आपके सम्पर्क में आते हैं, करुणावान्, क्षमाशील एवं दयालु रहें। मूक पशुतुल्य न बने रहें।

अपनी भीतरी दिव्यता को उद्दीप्त करें क्योंकि उससे अपने व्यक्तित्व एवं कर्म–कलाप को उजागर करना है। सन्त संगति द्वारा आपने जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को समझ लिया है। इस संयोग द्वारा जो प्रकाश एवं ज्ञान आपको प्राप्त हुआ है, उसे कुछ भी आवरणित न कर पाये। परमेश्वर आपको आशीर्वाद दें तथा सर्वदा आपको अपने दिव्य सान्निध्य में रखें।

*(स्वामी श्री रामदास जी महाराज : अनुवादक परम पूजनीय स्वामी विश्वामित्र जी महाराज)*

# व्यास-पूर्णिमा

*व्यास पूर्णिमा श्रीरामशरणम् परिवार के लिए विशेष महत्व का दिन है, न केवल इसलिए कि यह गुरुपूर्णिमा का पावन दिवस है अपितु इसलिए भी कि आज का दिन प्राकट्य दिवस है।*

स्वामी जी महाराज ने स्वयं इसका वर्णन करते हुए कहा, ''मुझे उस स्थान पर साधना करते हुए एक मास बीत गया तो, सात जुलाई, 1925 व्यासपूर्णिमा के दिन, जब मैं आँखें बन्द किए प्रार्थना करने में निमग्न था तो मुझे 'राम' शब्द बहुत ही सुन्दर और आकर्षक स्वरों में सुनाई दिया। मैंने समझा कि कोई प्राणी इधर–उधर राम–नाम का उच्चारण कर रहा है। आँखें खोलीं और चारों ओर देखा तो कोई भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। फिर आँखें बन्द कीं तो उसी मधुर स्वर में 'राम' 'राम' शब्द सुनाई दिया। साथ ही आदेशात्मक शब्द आया– राम–भज, राम–भज, राम–राम!

*(प्रवचन पीयूष, पृ. ४)*

*इस दिन का विवरण परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी में इस प्रकार है।*

स्वामी जी यहीं (डलहौज़ी) रहा करते थे। उनकी देखभाल व कोठी की देखभाल के लिए लाला जी का मुनीम ''महाजन'' भी यहीं नीचे रहता था– एक रात खूब वर्षा हुई–गड़गड़ की आवाज़ आई। महाजन ने सोचा– कोई खिड़की तो खुली नहीं– बाहर निकले। स्वामी जी के साधना के कमरे में झाँका– तो देखा वह शीर्षासन लगाए हुए हैं, सोचा इनको कोई मार कर उल्टा लटका गया है और चुपचाप अपने कमरे में चले गए। नींद कहाँ आए–प्रातः जल्दी उठकर फिर झाँका, तो स्वामी जी वहाँ नहीं थे– इतने में स्वामी जी ने उनका कन्धा पकड़ा और कहा क्या देख रहे हो? महाजन ने सारा हाल सुनाया– कहा कि शुक्र है आप ज़िन्दा हो। स्वामी जी हँस कर कहने लगे परमेश्वर को पाने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। महाजन ने भोलेभाव से पूछा कि परमेश्वर को कब पाएँगे? स्वामी जी ने कहा,''अब थोड़े दिनों की बात है''– इतना कह कर सैर को चले गए।

. . . व्यासपूर्णिमा आ गई– स्वामी जी ने प्रातः लाला जी से कहा कि मिठाई मँगवाएँ– एक बर्फ़ी का डिब्बा आ गया– स्वामी जी ने एक टुकड़ा लिया और शेष महाजन को दे दिया– महाजन ने कहा,''स्वामी जी मैं इतना क्या करुँगा?'' स्वामी जी ने कहा, ''अरे रख ले, खा लेना, आज खुशी का दिन है।'' महाजन ने पूछा महाराज, ''कैसे?'' स्वामी जी ने कहा,''जो तू कहता था वह हो गया।'' दोनों बहुत प्रसन्न थे। आधी रात के समय ऐसा लगा जैसे धरती हिल रही हो– फिर घंटे बजे–शंख बजे–प्रकाश हुआ– स्वामी जी सुनकर प्रसन्न होते रहे। ■

# व्यास-पूर्णिमा पर गुरुजनों को श्रद्धांजलि

व्यास–पूर्णमासी (दिनाँक 12 जुलाई, 2014) समीप आ रही है। इस पुण्य पर्व पर पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज का यह संदेश है– ''व्यास–पूजा का पुण्य पर्व हमारे धर्म में आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिए नियत है। आध्यात्मिक सम्बन्ध का मूल हमारे सत्संग में श्री राम–नाम है। इस मंगलमय राम–नाम–रुपी महांमन्त्र के आदान–प्रदान से ही हम आत्मा से एक–दूसरे के समीपतर हो जाया करते हैं। यही महामधुर राम–नाम हमारे सम्बन्ध को मनोहर और मीठा बनाता है। परमात्मा श्री राम ही परम–गुरु है। उस परम गुरु का पुण्य प्रतीक परम–पावन श्री राम–नाम है। उसका कीर्तन, जाप, पाठ, आराधना ही परम गुरु की पर्व के दिन पूजा है।''

पूज्यपाद श्री स्वामी जी इसी भाव से व्यास पूर्णिमा का पर्व मनाया करते। हमारे गुरुजन आज के पुण्य पर्व पर महर्षि व्यासदेव जी महाराज को स्मरण कर उन्हें वन्दन किया करते। जिन्होंने अध्यात्म–ज्ञान से परिपूर्ण वेद आदि अनेक सद्ग्रन्थों की रचना कर जगत को ब्रह्म विद्या का ज्ञान कराया और ब्रह्म तत्व तथा आत्म तत्व का ज्ञान जगत जनों को सुलभ किया। वही अध्यात्म ज्ञान अनेक संतों महात्माओं ने प्राप्त कर आगे प्रचारित तथा प्रसारित किया। उन सबको भी गुरुजन सादर नमन किया करते थे। वही अध्यात्म ज्ञान (ब्रह्मविद्या तथा आत्मज्ञान) परम गुरु (परमात्मदेव) ने कृपावत् होकर श्री स्वामी जी महाराज के अन्तःकरण में व्यासपूर्णिमा के पावन दिन ही 'राम' शब्द के रुप में परम धाम से अवतरित कराया। राम–नाम का प्राकट्य दिवस होने के कारण व्यास–पूर्णिमा हम सब साधकों के लिए अतिशय महत्वपूर्ण पर्व है।

पूज्यपाद ने अति करुणावंत होकर वही ज्ञान (मंगल राम–नाम महामंत्र) हम सबके हृदय में स्थापित कर अध्यात्म में प्रवेश कराया। यही गुरु–शिष्य सम्बन्ध है। इस पर्व पर हम सब सद्गुरु को स्मरण करते हुए, उनका वन्दन करते हुए, उनके प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करते हैं–

**उसके गुण उपकार का, पा सकूँ नहीं पार।**
**रोम-रोम कृतज्ञ हो, करे सुधन्य पुकार।।**

इस पर्व पर पूज्य श्री महाराज जी के श्रीमुख वाक्य हैं, ''गुरु में गुरुता के पूजन का दिन है आज, शरीर का नहीं। अच्छा साधक शरीर को नहीं पूजता, हमें अच्छे शिष्य बनना है। व्यास पूर्णिमा के अतीव मांगलिक पर्व तथा पवित्र दिवस पर साधनामय जीवन अर्थात् पवित्र, ईमानदार तथा तपस्वी जीवन व्यतीत करने की आज हम पुनः शपथ लें। मंगल कामनाएँ।''

आज के दिन हम सब साधक गत वर्ष का लेखा–जोखा करें, आत्म निरीक्षण करें, साधना में कितनी शिथिलता आई, कितने नियम भंग हुए, गुरु आज्ञा कब–कब भंग हुई, कितना मन पवित्र हुआ? इत्यादि। अतः अब हम नवीन उत्साह से, नई उमंग से, समग्र सजगतापूर्वक अपने मार्गदर्शक के अनुसार साधना–पथ पर आरुढ़ हों और निर्मल बुद्धि, मीठी वाणी, दिव्य करणी प्राप्त करें। मनसा, वाचा, कर्मणा गुरु–शरण में समर्पित रहें। 'अपने पथ पर आप चलाओ, पथ पतन न पाऊँ मैं'– पूज्य सद्गुरुदेव के श्री चरणों में यही प्रार्थना है।

परम गुरु जय जय राम।

## श्री गुरुदेवाय नमः

**''पथ में प्रगटे सद्गुरु, हस्त पकड़ कर आप।**
**ताप तप्त को शान्त कर, दिया नाम का जाप।।**

*भक्तिप्रकाश 'गुरु महिमा' पृष्ठ 51*

जीवन की पथरीली राह पर चलते–चलते जब मनुष्य थक जाता है, हताश हो जाता है, उसे कहीं से कोई भी सहारा प्राप्त नहीं होता, तो ऐसे में केवल सत्गुरु के ही सहारे की आशा होती है। व्याकुल हृदय से स्मरण करने पर अवश्य ही सत्गुरु पथ में जैसे प्रकट होकर उस शिष्य का हाथ पकड़ लेते हैं और उसे पाप–ताप से बचाते हैं, शान्त कर देते हैं। साथ ही ऐसे अनोखे सत्गुरुदेव एक उपकार और भी करते हैं कि उसे नाम का जाप प्रदान करते हैं, जिससे उसकी भौतिक समस्याएं तो दूर हो ही जाती हैं, अपितु राम नाम आत्म–कल्याण में भी सहायक होता है। कृपालु सत्गुरुदेव उस साधक को नाम–दान के माध्यम से सत्य के पथ पर व परमात्मा की ओर अग्रसर होने का सुअवसर प्रदान करते हैं। ऐसे दयालु सद्गुरुदेव जी को अन्तर्मन से मेरा बार–बार नमन हो! हृदय से कोटि कोटि प्रणाम हो।

नमो नमः गुरुदेव तुमको नमो नमः।

# आध्यात्मिक विषय पर परम पूजनीय महाराज जी के उत्तर

*(परम पूजनीय महाराज जी के साथ साधकों के पत्राचार के अंश)*

**प्र. महाराज जी मैं अपने वैवाहिक जीवन से खुश नहीं हूँ। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए एवं मार्गदर्शन कीजिए।**

पूजनीय महाराज जी : अलगाव तो किसी भी समय हो सकता है परन्तु वैवाहिक जीवन को बचाना एवं धैर्यवान बनना एक उपलब्धि है। परमात्मा का नाम एक मात्र सहायक है। प्रभु राम कृपा करें। सप्रेम राम राम जी।

**प्र. महाराज जी, मुझे अपने वैवाहिक जीवन में परेशानी आ रही है। कृपया मार्गदर्शन करें।**

पूजनीय महाराज जी : क्या यह संभव है कि आप भी कमाना शुरु कर दें? कृपया इस सुझाव पर गौर करें। रोज़ाना जितनी बार सम्भव हो श्री अमृतवाणी का पाठ करें। अपने पति के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। बहस न करें। बल्कि राम राम राम राम उच्चारण करें। यह आपको उन्हें सहन/बर्दाशत करने की शक्ति देगा। प्रेम चमत्कारी होता है, यह अप्रत्याशित बदलाव ला सकता है। कृपया प्रयत्न करें। सप्रेम राम राम जी।

**प्र. महाराज जी, मैं कर्ज़ में हूँ।**

पूजनीय महाराज जी : मैं आप लोगों को राम राम राम के हज़ारों से भी ज्यादा जाप के अलावा और कोई तरीका नहीं बता सकता। सिर्फ यही आपकी मुश्किलों को दूर कर सकता है।

– आप सभी को सप्रेम राम राम।

**प्र. महाराज जी, कृपया हमें बताएं कि हम कहाँ रहें?**

पूजनीय महाराज जी : उसकी कृपा से कोई उचित समाधान अवश्य सामने आयेगा। हमें ईंट, लकड़ी और संगमरमर से कोई आसक्ति नहीं। हम ऐसी परिस्थिति एवं स्थान ढूँढें जिससे हमें शान्ति और परमानन्द की प्राप्ति हो। प्रभु राम कृपा करें। बधाई और सप्रेम आप सभी को जय जय राम।

**प्र. महाराज जी, मैं नया काम शुरु कर रहा हूँ।**

पूजनीय महाराज जी : सप्रेम राम राम जी – सफलता पूर्णतया उन परम पावन हाथों में है। यह किसी और पर निर्भर नहीं है। स्वयं को उससे जोड़कर रखो और उसकी कृपा स्वतः तुम तक पहुँचेगी। आप दोनों अमृतवाणी का पाठ करें– कम से कम दिन में दो बार। शुभ कामनाएँ और प्यार।

**प्र. महाराज जी, कृपया आशीर्वाद दीजिए और मेरी दोस्ती का मार्गदर्शन कीजिए।**

पूजनीय महाराज जी : परमात्मा को अपना परम और शाश्वत मित्र बनाइए फिर कोई चिन्ता, भय या संदेह नहीं रहेगा। परमात्मा कृपा करें। सप्रेम जय जय राम।

**प्र. महाराज जी मैं काम कर रहा हूँ ताकि मैं अपनी पढ़ाई का खर्च उठा सकूँ।**

पूजनीय महाराज जी : प्रभु राम कृपा करें। आप प्रतिदिन दो बार नहीं तो एक बार अवश्य श्री अमृतवाणी का पाठ करें। हृदय और आत्मा से परिश्रम करें। नव वर्ष की शुभ कामनाएँ। सप्रेम जय जय राम।

*(महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं जबकि प्रश्नकर्त्ता की गोपनीयता बनाए रखने के लिए प्रश्नों को आवश्यकतानुसार थोड़ा बहुत संशोधित किया गया है)* ■

## परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के संस्मरण

एक बार स्वामी जी किसी को मिलने गए, वहां एक सफेद दाढ़ी वाले बुर्जुग बैठे थे, उन्होंने पूछा, "महाराज! आपकी उम्र क्या है?" "मैं तो अपने आप को अभी बच्चा ही समझता हूं।" "आप रहते कहाँ हैं?" महाराज ने अपने शरीर की ओर इशारा करके कहा, "मेरी तो यही कुटिया है– मैं इसके भीतर ही घूमता हूं।"

*(परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से)*

# विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

## मार्च से जून 2014

### साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

**अमरपाटन**, मध्य प्रदेश, में 11 मार्च को सत्संग के पश्चात् 1292 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**जबलपुर**, मध्य प्रदेश, में 12 मार्च को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ जिसमें लगभग 2500 व्यक्ति सम्मिलित हुए और 215 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**सिरसा**, हरियाणा, में 27 मार्च सत्संग के पश्चात् 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**रोहतक**, हरियाणा, में 5 एवं 6 अप्रैल को खुले सत्संग का आयोजन हुआ।

**मण्डी**, हिमाचल प्रदेश, में 20 अप्रैल को एक दिन के खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 46 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**बलाना**, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में 27 अप्रैल को श्री अमृतवाणी सत्संग हॉल का उद्घाटन हुआ तत्पश्चात् 100 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**सरदारशहर**, राजस्थान, में 30 अप्रैल विशेष सत्संग के पश्चात 486 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**फिज़ी**, में सुवा, लम्बासा, नादी एवं बॉ में 4 से 7 मई सत्संगों का आयोजन हुआ। खुले सत्संग में वर्षा के बावजूद 65 साधक शामिल हुए। सभी की प्रतिबद्धता, शान्ति और समय की पाबंदी देखने योग्य थी।

**सिडनी**, अस्ट्रेलिया, में 9 से 11 मई तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ। मेलबर्न, ऐडीलेड, ब्रिसबेन, फिजी और भारत के साधक शामिल हुए। फिज़ी एवं अस्ट्रेलिया में कुल 307 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**नागदा**, मध्यप्रदेश, में 11 मई को सत्संग के पश्चात् 1782 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**भरेड़ी**, हिमाचल प्रदेश, में 18 मई को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 310 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**कठुआ**, जम्मू व कश्मीर, में 25 मई सत्संग के पश्चात् 167 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**फरीदाबाद**, हरियाणा में 25 मई को सत्संग के पश्चात् 116 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**काठमाण्डू**, नेपाल में 31 मई को विशेष सत्संग के पश्चात् 149 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**दिल्ली**, में 170 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

**लोट**, हिमाचल प्रदेश, में 12 जून को नाम दीक्षा हुई जिसमें 93 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। 13 व 14 जून को श्रीरामशरणम् लोट में सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें 330 साधकों ने भाग लिया।

नोट : पिछले सत्य साहित्य Vol. 2 No. 2 अप्रैल से जून 2014 बानमौर मध्यप्रदेश में 22 जनवरी को नाम दीक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्तियों की संख्या भूल से 127 लिखी गई थी। जबकि 227 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। ■

### 'तुम एक कदम बढ़ो, वह दस कदम बढ़ता है'

19 - 25 मई तक के दिन सायं 5 से 7 बजे दिल्ली में सवा करोड़ का जाप यज्ञ के लिए 800-1000 साधकों ने भाग लिया। परमात्मा ने ऐसी अहेतुकी कृपा की कि पहले ही दिन 1.58 करोड़ जाप संख्या पूरी कर ली गई। आने वाले दिनों में वह संख्या 12.5 करोड़ हो गई, यानि निर्धारित संख्या से 10 गुणा ज्यादा। सत्य है परमात्मा कहता है तुम एक दो मैं दस दूंगा।

इस जाप यज्ञ में परमात्मा ने साधकों से ऐसे भाव से जाप करवाया कि इससे प्रेरित होकर लगभग 250 साधकों ने स्वयं सवा करोड़ जाप करने का संकल्प लिया और सभी इसे बहुत उत्साह और प्रीति से कर रहे हैं।

## निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् भवनों की प्रगति

**नरोट** मेहरा, पंजाब, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण हो जाएगा।

**पीलीबंगा**, हनुमानगढ़, राजस्थान, में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

**तिब्बड़**, गुरदासपुर पंजाब में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य चल रहा है।

**पठानकोट**, पंजाब में खुले सत्संग के समय 300 साधकों के ठहरने के लिए स्थान का निर्माण तीव्र गति से चल रहा है और दिसम्बर में होने वाले खुले सत्संग तक इसके पूरे होने की संभावना है।

**नया प्रकाशन :** ''अलौकिक राम अलौकिक झाबुआ'' (दिव्य मानस के दर्पण जिन्होंने करोड़ों जाप किए हैं) नामक पुस्तक का विमोचन हुआ। एक अंश : **बिनु हरि कृपा मिलें नहीं सन्ता।** परमात्मा की कृपा और मेरे अहोभाग्य कि ऐसे सच्चे सन्त मिल गये। सदा उनकी कृपा मिलती रहे। (पृष्ठ 115) ■

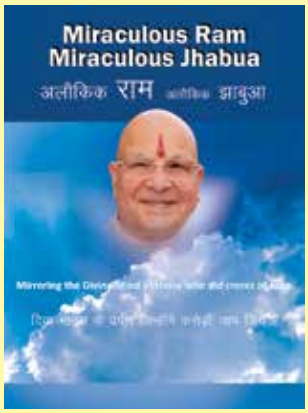


# झाबुआ की तर्ज पर पूरे विश्व के साधकों को दिलाएंगे जाप का संकल्प

**श्री राम शरणम भवन पर 'अलौकिक राम-अलौकिक झाबुआ' पुस्तक के विमोचन पर स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली के ट्रस्टी वीरेंद्र कत्याल ने दी जानकारी**

भास्कर संवाददाता. झाबुआ

झाबुआ की तर्ज पर राम शरणम से जुड़े पूरे विश्व के साधकों को सवा करोड़ जाप का संकल्प दिलाया जाएगा। 2 जुलाई को महाराजश्री के निर्वाण दिवस को संकल्प दिवस के रूप में मनाते हुए इस दिन सभी साधकों को जाप का संकल्प दिलाएंगे।

यह बात स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट के ट्रस्टी वीरेंद्र कत्याल ने कही। वे झाबुआ स्थित श्री राम शरणम भवन पर 'अलौकिक राम-अलौकिक झाबुआ' पुस्तक के विमोचन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा जिस तरह झाबुआ में राम शरणम से जुड़े 28 हजार साधकों ने सवा करोड़ राम-नाम जाप किए हैं, उसी तरह देश और देश के बाहर के साधकों को भी प्रेरित किया जाएगा। इस संबंध में दिल्ली में निर्णय लिया जा चुका है। कत्याल ने कहा हमारे तीनों गुरुवर ने जो बातें कहीं, उन्हें प्रायोगिक रूप से किसी ने कर दिखाया है तो वे हैं झाबुआ के साधक। किताब के लेखक एवं अर्जेंटिना धर्म संसद के सदस्य डॉ.

विमोचन कार्यक्रम में मौजूद साधकगण।

गौतम चटर्जी ने किताब लिखने की प्रेरणा से लेकर उसके प्रकाशन तक की स्थिति का ब्योरा दिया। उन्होंने कहा सारी बातें तो किताब में नहीं लिखी जा सकती, क्योंकि काफी कुछ ऐसी अनुभूतियां हैं जिसे शब्दों में नहीं पिरोया जा सका। उन्होंने कहा जाप से अलौकिक लाभ होता है। झाबुआ के संदर्भ में डॉ. चटर्जी ने झाबुआ तुम्हें प्रणाम कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। किताब का हिंदी अनुवाद करने वाले लोकेंद्र सत्कावत ने भी अपनी बात रखी। अतिथि परिचय निर्मल शर्मा ने दिया। संचालन आनंद विजयसिंह सत्कावत ने किया। आभार श्री राम शरणम सत्संग समिति के उपाध्यक्ष पंकज कोठारी ने माना। इस अवसर पर स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली के चेयरमैन अनिल दीवान, महाराजश्री के लघुभ्राता कमल महाजन, कपिला दीवान, अमृत वाणी की गायिका प्रेम निझावन, श्री राम शरणम सत्संग समिति के अध्यक्ष मुरलीधर राठौर, सचिव सुशील शर्मा, किशोर भट्ट, हमेंद्र पटेल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान आजाद साहित्य परिषद की ओर से 'अलौकिक राम-अलौकिक झाबुआ' पुस्तक के लेखक का सम्मान भी किया गया।

### 190 साधकों की अनुभूतियों का संकलन

'अलौकिक राम-अलौकिक झाबुआ' पुस्तक में 190 साधकों की अलौकिक अनुभूतियों का संकलन है। पहले संस्करण की 15 हजार प्रतियां प्रकाशित की गई हैं।

## बच्चों के लिए

# द,द,द : प्रजापति का शिष्यों को उपदेश

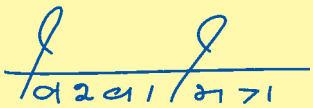

बृहदारण्यकोपनिषद् के पाँचवें अध्याय के द्वितीय ब्राह्मण में ऐसा वर्णन आता है कि एकदा देव, नर और दानव तीनों ने प्रजापति के समीप जाकर कहा, ''हे पितामह ! आपने हमारी और समस्त सृष्टि की रचना की, हम लोग स्वेच्छाचारी जीवन व्यतीत कर रहे हैं अतएव हमें सन्तोष प्राप्त नहीं है। हम सबका एक ही प्रश्न है कि हमें सच्चा सुख पाने का साधन बताने की कृपा करें'' ! ब्रह्मा जी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया,''हे देव, नर और असुर ! आप तीनों की समस्या एक ही है और इसका समाधान भी एक ही है। हम तुम्हें एक अक्षर 'द' का उपदेश देते हैं। यह आप सबके लिए परम सुखदायी होगा।''

तीनों ने गम्भीर मनन किया और कुछ समय के चिन्तन के उपरान्त देव, प्रजापति को प्रणाम करके उनसे विदा लेने लगे, तब ब्रह्मा जी ने पूछा, ''क्या तुम मेरे उपदेश का मर्म समझ गये हो''? देव ने कहा, ''महाराज! देव समुदाय ऐश्वर्य में, विषय भोगों में आकण्ठ डूबा रहता है; परन्तु फिर भी अतृप्त ही रहता है। अतः आपने हमें 'दमन' अर्थात इन्द्रिय–संयम अथवा मनोनिग्रह का उपदेश दिया है ताकि हम अपनी वासनाओं को, वृत्तियों को नियन्त्रण कर सकें।'' प्रजापति ने समर्थन कर, आशीर्वाद देकर उन्हें विदा किया।

तद्नन्तर, ब्रह्मा जी ने मनुष्य से पूछा,''आप मेरे उपदेश का क्या आशय समझे?'' उत्तर देते हुए मनुष्य ने कहा, ''हे स्वामी! हम कर्मशील प्राणी हैं, अपना अधिकांश समय धनोपार्जन में व्यतीत करते हैं। हमारी सारी प्रवृत्ति प्राप्त करने, सम्भाल करने और संग्रह करने में ही केन्द्रित रहती है। अतः आपने उचित ही आदेश दिया कि 'दो', 'दिया करो', इस प्रकार ब्रह्मा जी ने आशीर्वाद देकर उन्हें भी विदा किया और निर्देश किया कि समस्त मानव जाति को 'दान' देने का मेरा सन्देश देना।

तत्पश्चात्! ब्रह्मा जी ने असुर से पूछा, ''क्या आप भी अर्थ जान गए''? दानव ने उत्तर में कहा,''भगवन्! हमारा सम्प्रदाय क्रोधी स्वभाव का है, सहनशीलता से हीन है, बिना कारण भी झगड़े पर उतारु हो जाता है, हम निर्दोष की हिंसा करने में भी नहीं चूकते। अतएव हमें 'दया' करने का उपदेश देकर आपने कृतार्थ किया है।'' प्रभु का आशीर्वाद पाकर असुर ने भी प्रस्थान किया।

तनिक गंभीरता से विचार करें, तो स्पष्ट होगा कि दैवी गुण, मानवी गुण, आसुरी अर्थात् पाश्विक दुर्गुण हम सब में समकाल विद्यमान हैं; बिल्कुल उसी प्रकार जैसे सत्व, रजस और तमस हमारी प्रकृति में समाविष्ट हैं, जिसमें दैवी गुण अहिंसा, शुद्ध–अन्तःकरण, संयम, ज्ञान,तप, करुणा–दया, उदारता, दान,बलिदान, निरभिमानता आदि आ जाते हैं, उसे मानुषी स्वभाव से ऊपर देवरूप हो गया जाना जाता है और जिसमें दम्भ, हिंसा, घमण्ड, क्रोध, कठोरता, अज्ञान आदि दुर्गुण प्रचुर मात्र में हैं, उसे असुर समझा जाना चाहिए।

दमन : भौतिक कामनाएँ व्यक्ति एवं समाज के जीवन में असंतोष एवं अशान्ति उत्पन्न करती हैं। परमात्मा का ध्यान शान्ति व विकास की ओर तथा विषयों का ध्यान विनाश की ओर उन्मुख करता है। यदि मनुष्य मन को आसक्ति से मुक्त कर ले, तो इन्द्रियाँ भी विषयों के प्रति आकर्षित नहीं होंगी। मनुष्य इसके अधीन न होकर, इसका शमन करे, अनासक्त रहे, नियमानुसार, धर्मानुकूल विवेकपूर्वक जीवन यापन करे। मन को अशुभ अनुचित से शुभ उचित की ओर उन्मुख करने के भरसक प्रयास में परिश्रम और कष्ट अवश्य हैं; परन्तु परम सुख का साधन भी यही है।

दान : दीन–दुःखी को अपाहिज, अनाथ, निस्सहाय को, भूखे–प्यासे तथा आवश्यकतावान् को अन्न, जल, वस्त्र, आश्रय और स्थान देना, 'दान' कहा गया है। किसी की कमी को और आवश्यकता को द्रव्य से, उपदेश से और सहायता से पूरा कर देना भी 'दान' ही माना जाता है। दान का सम्बन्ध अपरिग्रह से है। सच्चाई और परिश्रम से कमाए हुए धन में से कुछ अंश शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार अन्य प्राणियों की सेवा के लिए श्रद्धापूर्वक अर्पित करना चाहिए। दान देने से वित्त में सदा वृद्धि ही होती है, कभी कमी नहीं आती, दान देने से तन मन और धन पवित्र होते हैं। दान–वृत्ति अर्थात् दान करने के लिए धन अर्जित करना, वितरण के लिए धन कमाना, आत्म–कल्याण और समाज–कल्याण का आधार है।

दया : किसी जन के दुःख देखकर, मनुष्य के हृदय में जो अनुकम्पा करुणा भाव उत्पन्न होती है, वह भाव दया है। दया दीन, दुःखी और पीड़ित प्राणी पर की जाती है। दुःखी जन के साथ सहानुभूति करना, उसके कष्ट क्लेश में उसको सहायता देना, उसकी व्याधि, वेदना में उसकी सेवा करना और उसके दुःख दूर करने का भरसक प्रयत्न करना, दया के चिन्ह हैं। यह भाव प्रकट तब होता है जब किसी के दुःख दर्द को देख कर, हृदय द्रवित हो और व्यक्ति वैसी ही वेदना स्वयं में अनुभव करे।

*(परम पूजनीय श्री महाराज जी द्वारा रचित लेख, 'आनन्द बोध', अप्रैल 1991 में प्रकाशित)*

| साधना सत्संग (जुलाई से सितम्बर 2014) | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | 30 जून से 3 जुलाई | सोमवार से बृहस्पतिवार | हरिद्वार |
| 2 | 7 से 12 जुलाई | सोमवार से शनिवार | हरिद्वार |
| 3 | 24 सितम्बर से 3 अक्तूबर | बुधवार से शुक्रवार | हरिद्वार रामायणी |

| खुले सत्संग (जुलाई से सितम्बर 2014) | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | 27 से 29 जुलाई | रविवार से मंगलवार | दिल्ली |
| 2 | 15 से 16 अगस्त | शुक्रवार व शनिवार | मनाली |
| 3 | 23 से 24 अगस्त | शनिवार व रविवार | सूरत |
| 4 | 6 से 7 सितम्बर | शनिवार व रविवार | रतनगढ़ |
| 5 | 13 से 14 सितम्बर | शनिवार व रविवार | रिवाड़ी |
| 6 | 19 से 21 सितम्बर | शुक्रवार से रविवार | गुरदासपुर |

| श्रीरामशरणम् नई दिल्ली में नाम दीक्षा की तिथियाँ | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | 12 जुलाई | शनिवार | अपराह्न 4.00 बजे |
| 2 | 27 जुलाई | रविवार | प्रातः 10.30 बजे |
| 3 | 17 अगस्त | रविवार | प्रातः 10.30 बजे |
| 4 | 21 सितम्बर | रविवार | प्रातः 10.30 बजे |

| अन्य केन्द्रों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (जुलाई से सितम्बर 2014) | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | 12 जुलाई | शनिवार | होशियारपुर |
| 2 | 16 अगस्त | शनिवार | मनाली |
| 3 | 24 अगस्त | रविवार | सूरत |
| 4 | 31 अगस्त | रविवार | नामरुप आसाम |
| 5 | 7 सितम्बर | रविवार | रतनगढ़ |
| 6 | 7 सितम्बर | रविवार | शिमला (श्री अमृतवाणी सत्संग के बाद) |
| 7 | 14 सितम्बर | रविवार | रेवाड़ी |
| 8 | 21 सितम्बर | रविवार | गुरदासपुर |

| पूर्णिमा की तिथियाँ (जुलाई से सितम्बर 2014) | | |
|---|---|---|
| 1 | 12 जुलाई | शनिवार |
| 2 | 10 अगस्त | रविवार |
| 3 | 9 सितम्बर | मंगलवार |

**नोट : 31 अगस्त 2014 को नामरुप, आसाम में श्री रामशरणम् का उद्घाटन होगा।**

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव इंडिया, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न० के लिए आवेदन दिया गया है।